स्लेट्रिंग - एक अनुभव

- सी.पी.एल.रश्मि राजे
बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

5 सितम्बर को हम सभी कैम्प में थे । तभी हमें हमारी शिक्षिका ने आकर बताया कि हमारे कॉलेज से 20 लड़कियों का चयन एकदिवसीय स्लिटरिंग के लिए हुआ है । हम लोग खुशी से झूम उठे क्योंकि हममे से अधिकांश लड़कियों का जीवन में यह पहला एन.सी.सी. का कैम्प था । और पहले ही कैम्प में हमें यह मौका मिला । हमारी लेफ्टि. डॉ. श्रीमती सरोज गुप्ता शिक्षिका ने हमें बधाईयाँ दीं और कहा कि तुम लोग बहुत खुशकिस्मत हो जो तुम्हें इस कैम्प में पहले ही वर्ष में जाने को मिल रहा है। उन्होंने हमारा आत्मविश्वास और मनोबल बढ़ाया और फिर हम सभी 6 सितम्बर की सुबह निकल पड़े। सागर की 10 वीं पुलिस बटालियन के कैम्प से छतरपुर की 25 एम.पी. बटालियन एन.सी.सी. की ओर । रास्ते भर हमने खूब मस्ती की । हमारा वह 5 घण्टे का सफर हमारे लिए एक यादगार सफर है । 5 घण्टे का वह मौजमस्ती भरा सफर तय करते हुए हम पहुँच गए महाराजा छत्रसाल की नगरी में । वहाँ 25 एम.पी. बटालियन एन.सी.सी. में हमारा स्वागत किया गया। एक बहुत बड़े लगभग 40 फीट ऊँचे टॉवर में जिस पर से हमें स्लिटरिंग करना थी । वहाँ हम लोग करीब 12.00PM बजे पहुँचे । 1 घण्टे में परिचय व नाश्ता बगैरह करके हम पहुँच गए स्लिटरिंग करने । यह बहुत रोमांचकारी अनुभव था ।

वहाँ पर एक खुली जगह थी जिसके बीचों-बीच यह टॉवर खड़ा हुआ था लगभग 40-50 फीट ऊँचा था । ऊपर छत जैसा था जो लकड़ी का बना हुआ था चारों ओर से बंद था दो तरफ दरवाजे थे। एक ऊपर चढ़ने के लिए एक छलांग मारने के लिए । ऊपर जाने के लिए लोहे के गोल डण्डों की पतली सीढ़ियाँ लगी हुई थी । जहाँ से छलांग मारनी थी वहाँ एक नायलॉन की पतली रस्सी थी जो थी जो देखने में बिल्कुल पतली पर बहुत मजबूत थी । थोड़ी सी भी असावधानी से कहीं पर भी कट सकता था । इससे एक सेफ्टी बेल्ट बंधी हुई थी जिससे हम गिरे नहीं और हाथों की सुरक्षा के लिए ग्लब्स थे । खैर हम लोग एन.सी.सी. के नियमानुसार एक के बाद एक अनुशासन से ऊपर चढ़ने लगे । ऊपर जाने पर बहुत डर लगता था । क्योंकि चढ़ने पर सीढ़ियाँ हिलती थीं पर ऊपर पहुँचने पर डर गायब हो गया । हमने सेफ्टी बेल्ट और ग्लब्स पहना और रस्सी को पकड़कर नीचे छलांग लगा दी । कितना अद्‌भुत अहसास था वह । कितना अच्छा लग रहा था, इसे करके । हम सभी का इसे दोबारा करने का मन था पर समय कम होने की वजह से हम इसे एक ही बार कर पाये । दूसरे दिन सुबह 11 बजे हमने फिर इसकी एक प्रेक्टिस बिना सेफ्टी बेल्ट के की । सचमुच कितना अद्‌भुत अनुभव था वह । हमारा इसे बार-बार लगातार करने को मन कर रहा था । पर हमें कैम्प में वापस लौटना था। हमें एक दिन के लिए ही भेजा गया था । हम 12 बजे फिर वापस अपने शहर की और निकल पड़े । यहाँ हमें शाबाशी दी गई व हमारे ग्रुप कमांडर मि. अश्विनी वर्मा सर ने हमें गोल्ड मेडल व सर्टिफिकेट प्रदान किया । हम भविष्य में भी इसे करना चाहते हैं ।

स्लिटरिंग का महत्व :- स्लिटरिंग का प्रयोग हम उस समय करते हैं जब हमारी सेना को दुश्मन के बीच में जाकर उसके चक्रव्यूह को तोड़ना पड़ता है । इसका प्रयोग पिछले वर्ष मुम्बई में ताज होटल में हुई आतंकी हमले से रक्षा के लिए हमारे सेना के जवानों ने किया था । इसमें वे हेलीकॉप्टर के सहारे ताज होटल के छत पर उतरे थे व कई लोगों की जान बचाई थी।

एकता

वन्दना मेहरा
बी.कॉम. चतुर्थ सेमेस्टर

हिन्दु और मुसलमान इस देश की दो आँखें हैं और ये दोनो कौमें खूब प्यारी और मुहब्बत के साथ सदियों के कंधे से कंधे और कदम से कदम मिलाकर रहती आ रही हैं, साम्प्रदायिकता इस देश के मिजाज में नहीं हैं, और हो भी कैसे ? जरा गौर फरमाईए कि जब आप Ramjan लिखते हैं तो Ram से शुरूआत करते हैं, जब आप Deewali लिखते हैं तो Ali से समाप्त करते हैं, शो रमजान में बजे राम और दीवाली में छिपे अली से हमें मुहब्बत से रहने का पैगाम देते हैं, अगर आप राम के भक्त और रहीम के बंदे थोड़ी अक्ल से काम लें तो वह मुल्क को स्वर्ग से भी सुन्दर बना सकते हैं । एक-दूसरे से मिलकर रहना व एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना तथा किसी से भी भेदभाव नहीं करना यह हमारे लिए तथा देश के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है ।

इससे केवल हमारा ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का विकास होगा और यह विकास केवल एक व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है । जैसा कि कहा जाता है कि संगठन में शक्ति है ठीक उसी प्रकार हम सब देशवासी मिलकर राष्ट्र का विकास कर सकते हैं और जब हमारा देश उन्नति कर चुका होगा तब हम गर्व से कह सकते हैं हमारा देश महान है । इस प्रकार हम अपने मुल्क को स्वर्ग से सुन्दर व अमूल्य बना सकते हैं ।

माँ तुम्हारी बहुत याद आती है

सर्दी के मौसम में अधिकतर नींद अचानक खुल जाती है
हर दिन हर पल में है तू, ये वहम तोड़ जाती है,
किसी की उंगलियाँ मेरे बालों को सहलाती है,
मालूम पड़ता है कि पवन इस तरह लहराती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती हैं ।
हजारों मरीजों को देखती हूँ अस्पताल में
चिल्लाते, कराहते, दर्द से झटपटाते पर जब
शिशु अस्पताल में इंजेक्शन के डर से कोई बेटी
उछलके अपनी माँ की गोद में चली जाती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
यूं दूर रहने की आदत सी हो गई है
बाहरी खाना जीवन की शैली हो गई है
स्वाद जीभ को आता नहीं, ध्यान चीज पर जाता नहीं
रसहीन पकवानों से काया मैली हो गई है
जब कोई लड़की अपने घर का खाना मुझे चिढ़ा कर खाती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
कॉलेज से निकलती हूँ जब, देखती हूँ कि
स्कूल की घंटी पर छोटे-छोटे बच्चे एक दिशा में छूटे चले जाते हैं
जहाँ उनके इंतजार में खड़ा है कोई अपना
उनकी उंगली पकड़ कर आश्वस्त हो जाते हैं
उनके वात्सल्य पर लालायित होते-होते जब
नजर अपनी सूनी हथेली पर जाती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
दिर भर की थकावट के बाद शाम को
दोस्तों से मिल के राहत काफी मिल जाती है
परन्तु बात सोने की आती है तो
हॉस्टल के कढ़े सिरहाने पर जब देर तक नींद नहीं आती है
माँ माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।
मेरे सारे प्रयासों में तुम्हारे स्पर्श की कमी नजर आती है ।
पर किसी रूप में मेरी परछांई मुझमें स्फूर्ति भर जाती है ।
जब कॉलेज के प्रोफेसर कभी बेटा करके बुलाते हैं
उनके चेहरे में तुम्हारी छवि नजर आती है
दिन के चौबीस घंटे, हर मिनिट, हर सेकेण्ड
जब घड़ी की सुई टक-टक करती जाती है
माँ तुम्हारी बहुत याद आती है ।

पूजा भुरहरि
बी.ए. छटवां सेमेस्टर

कविता

ये युग है कर्म प्रधान, कर्म से भाग्य बदल सकता है ।
कर्मठ यदि बने इंसान तो सूरज को भी निगल सकता है
विश्वास रखो तुम अपने पर, जो चाहो वो कर सकते हो
पत्थर पर डालो तीक्ष्ण दृष्टि तो पत्थर भी पिघल सकता है
दुनिया में ऐसा कार्य नहीं, आप जिसे न कर पाये
चाहो तो धरती हिल जाये, चाहो तो अम्बर जल जाये
तुम इकलौते हो दुनिया में, तुम जैसा कोई और नहीं
तुम जन्में केवल विजय हेतु, कोई और तुम्हारा ठौर नहीं
बस याद रखो जो अपने पर विश्वास किया करते हैं
वे अपनी सफलता का हर पल अहसास किया करते हैं
साहस व धैर्य कुछ भी नहीं तो, हिटलर क्यों विश्व विजेता
न्यूटन क्यों आखिर न्यूटन था, बॉयल क्यों विज्ञान प्रणेता था
तुम धैर्य लगन व साहस से, निज लक्ष्य ओर बढ़ते जाओ
सौगंध है वापिस मत आना, चाहे कितनी ठोकर खाओ
मत आँको खुद को कम करके, तुमको परचम लहराना है
तुम क्या हो क्या कर सकते हो, दुनिया को दिखलाना है
पर उन सबसे तुम दूर रहो, लक्ष्य में अपने बाधक है
पथ भ्रष्ट करेंगे ये तुमको, साधक के लक्ष्य में बाधक हैं
कौवे जैसी लगातार और बार-2 कोशिश तुम करना
बगुले जैसा ध्यान लगाकार, सदा प्रेक्टिस जमकर करना
कुत्ते जैसी क्षणिक निद्रा, फिर अध्ययन करना
अल्पहारी, गृहत्यागी बन अब प्राप्त सफलता करना
विद्यार्थी के पाँच लक्षण मैंने यहाँ कह डाले हैं
चलने वाले नहीं देखते, पैरों में कितने छाले हैं
तुम यौद्धा हो ले दीप शस्त्र, अंधियारों से लड़ना होगा
कुल दीपक हो इसीलिए तुम्हें दीपक बनकर जलना होगा
जाओ यौद्धा अब कसो कमर, देखो दिन ढलने न पाये
है लक्ष्य दूर कम समय, जरा सा तेज तुम्हें चलना होगा
देखता जब तक आपके पीछे, दुनिया सारी होगी
चाहे सृष्टि हो उलट-फुलट पर, जीत तुम्हारी होगी ।

माँ

माँ मंदिर सी पवित्र तू ही ममता की छाँव है ।
तू श्वास मेरी धड़कन जीवन की गति है ।
तेरी निगाहों में बसी करुणा की लहरें सागर ।
की तेरे आँचल में बस अमृत की मिलती गागर ।
आशीष के तले ही मेरी सफलता है ।
गीले में सोई माँ तू सूखे मुझे सुलाया ।
तूने संभाला मुझको उंगली पकड़कर चलाया ।
वरदान सृष्टि की तू तीर्थ सा छाप है ।
नयनों की मेरी देवी पलकों पर आ बसो ।
ओझल करती हो न जाना मेरे दिल में आ बसो ।
माँ तू है मेरी जिंदगी सागर में नाव है तू ।
सपने अधूरे पूरे करूँगी मैं माँ,
मुस्कान हो लबों पर रोने नहीं दूँगी माँ ।
तेरी उपासना मेरी मुक्ति का धाम है माँ ।

कु. रोशनी बाल्मीकि
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

कविता

अपनी तो हो गई परीक्षा
पास फेल ईश्वर की इच्छा
हमने की थी खूब पढ़ाई
रात-रात भर चिटें बनाईं
विद्यालय में कड़ा था पहरा
हमें लगा था धक्का गहरा
चिटें जेब में कूद रही थीं
खाली कॉपी गूँज रही थी
सूझ न पाया हम को कुछ भी
चार लकीरें झट से लिख दीं
ईश्वर अल्ला तेरा नाम
टीचर को सन्मति दे भगवान
बण्डल पूरा गायब करके रद्दी में बेचे भगवान

रश्मि जैन
बी.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर

माँ का चंद आभार

जब भी करती मेरी, सैलाब में आ जाती हैं ।
माँ दुआ करती हुई, ख्वाब में आ जाती हैं ।।
ये ऐसा कर्ज है कि जो, मैं अदा कर ही नहीं सकती ।
मैं जब तक घर न लौटूँ, मेरी माँ सज्दे में रहती हैं ।।
ये अंधेरे देख ले, मुँह तेरा काला हो गया ।
माँ ने आँखें खोली दो, घर में उजाला हो गया ।।
अभी मुझे पता है माँ मेरी, मुझे कुछ भी नहीं होने देगी ।
मैं घर से जब निकलती हूँ, दुआ भी साथ चलती है ।।
माँ के आगे यूं खुलकर नहीं रोना ।
जहाँ बुनियाद हो, इतनी नमी अच्छी नहीं होती है ।।

नेहा सोनी
बी.ए. छटवां सेमेस्टर

भ्रूण हत्या

एक बूँद गर्भ में समाई, माँ बनने का अहसास हुआ
सोचा गूँजेगी किलकारी, घर में खुशियों का त्यौहार हुआ
मातम सा छाया घर में, जब पता चला कि कन्या है
सिर्फ लिंग जानकर दुखी, क्या इतनी बदकिस्मत हूँ
दादी बोली हमें नहीं चाहिए, पिता की नहीं तमन्ना है ।
जिस नारी वंश से पिता तूने जन्म लिया
मैं उसी वंश की किलकारी हूँ ।
माँ, क्या तुम भी नहीं जानती हो ?
मैं मर जाऊँ इस जग में आने से पहले
मारेगा मुझे तिल-2 करके, मेरा अंग-2 वो काटेगा
मैं रोऊँ भी तो कैसे मुँह से आवाज नहीं आती
ये पाप-महापाप है माँ, मत बनो इसके भागी
मैं भगत सिंह, चंद्रशेखर जैसे बेटा बन सकती हूँ
मैं कल्पना, सानिया, मदर टेरेसा
बनकर तेरा नाम रोशन कर सकती हूँ
मैं कर सकती जो सब आज पुरूष करता है
फिर दहेज खर्च के डर से तुम मुझे मारना चाहते हो
बेटे की चाहत की खातिर, तुम बेटी की बलि चढ़ाते हो
मैं कली तुम्हारे आँगन की
मुझे आँगन में महकने दो
माँ रहम करो, पिता रहम करो
मुझे इस जग में आ जाने दो
मुझे फूल बनकर खिल जाने दो
मुझे इस जग में आ जाने दो

रक्षा जैन
बी.ए. छटवां सेमेस्टर

इसमें हमारी क्या है भूल

ऐसी खता हुई क्या बेटे
क्यों हमको दुत्कार किया ।
आखिर मात-पिता है तेरे
ये कैसा सत्कार किया ।
इतने लाड़ प्यार से हमने
तुमको पाला बड़ा किया ।
अच्छी शिक्षा भी दिलवायी,
और पाँवों पर खड़ा किया ।
बीबी की कान भराई ने
तुमको हमसे दूर किया ।
आखिर माता-पिता है तेरे
ये कैसा सत्कार किया ।
क्या भूल हो गई हमसे
जो हमको अपने से दूर किया ।
हलवा, पुरी तुम खाते थे
रूखी-सूखी ही दिया गया करो ।
आखिर मात-पिता है तेरे
ये कैसा सत्कार किया ।

A Prayer Granted

Oh God! Save me from climate change and global worning

pleads thy child.

God is polite so he smile he said what

I gave you was a rich neat and clean nature

but you spoiled it while being my best creature.

I lent you my umbrella the "Ozone Layer."

To save you from UV and take your good care

But you depleted it for selfishness

Your increasing civilization became cause of climate change

If the things still remaing the same

I am afraid you will have to pay for it and face shame.

Lets do a win-win settlement

you my child, strategize and act on sustainable development

you decide - better late than never, came forward together,

Make efforts so that the resources can stay for ever.

- Dr. Archana Verma

"माता–पिता और गुरु चरणों में"

मात-पिता और गुरू चरणों में प्रणाम बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार।।

1. माता ने जो कष्ट उठाया,
   वह ऋण कभी न जाय चुकाय।
   ऊंगली पकड़कर चलना सिखाया,
   ममता की दी शीतल काया।।
   जिनकी गोद में पलकर हम कहलाते हैं होशियार .....।।
   हम पर किया बड़ा .....।।
2. पिता ने हमको योग्य बनाया,
   कमा कमाकर अन्न खिलाया।
   पढ़ा लिखा गुणवान बनाया,
   जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का बना दिया हकदार.....।।
   हम पर किया बड़ा .....।।
3. तत्व ज्ञान गुरू ने दर्शाया,
   अंधकार को दूर हटाया।
   हृदय में शिक्षा दीप जलाकर,
   आगे बढ़ने का मार्ग बताया।।
   बिना स्वार्थ ही किया करें, ये तीनों बड़े उद्धार .....।।
   हम पर किया बड़ा .....।।

मात-पिता और गुरू चरणों में .....।।
हम पर किया बड़ा उपकार .....।।
ये मेरी मौलिक रचना है।

अपूर्वी जैन
B.Com II Sem.

तुम सबसे अच्छे हो पापा !

जब छोटी थी तो सोचती थी
पापा तुम जादूगर हो
हर समस्या का हल है।
तुम्हारी बंद मुट्ठी में
जब बड़ी हुई तो जाना
उलझे हो हर वक्त तुम
मेरी समस्या सुलझाने में
जब छोटी थी तो सोचती थी
पापा ने दुनिया देखी है।
जब बड़ी हुई तो जाना
मैं पापा की हम बेटियों
पापा की दुनिया है
जब छोटी थी तो सोचती थी
पापा की जेब में तारे हैं।
जब बड़ी हुई तो जाना
मैं और मेरी बहने पापा की
आँखों का तारा है।
जब छोटी थी तो सोचती थी
तुम सबसे अच्छे पापा हो
जब बड़ी हुई तो जाना
पापा तुम सबसे अच्छे हो
अब मैं बड़ी हो गई पापा
जान गई हूँ जीवन को
उतना आसान नहीं है यह
जैसा बचपन में लगता है।
पर अब भी
हर मुश्किल का हल
बंद है तुम्हारी मुट्ठी में
पापा अब भी तुम जादूगर हो।
तुम सबसे अच्छे हो पापा।
सारे संसार से अच्छे हो पापा।

रोशनी अहिरवार
B.Com. II Sem.

बेटियाँ

जब जब जन्म लेती हैं बेटी
खुशियाँ साथ लाती हैं बेटी
ईश्वर की सौगात हैं बेटी
सुबह की पहली किरण हैं बेटी
तारों की शीतल छाया हैं बेटी
आंगन की चिड़िया हैं बेटी
त्याग व समर्पण सिखाती हैं बेटी
नये रिश्ते बनाती हैं बेटी
जिस घर जाए, उजाला लाती हैं बेटी
बार-बार याद आती हैं बेटी
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिसके पास नहीं हैं बेटी
गुलशन का रूह गुल का सितारा हैं बेटियाँ
फुरसत मिले तो जरा इन्हें पढ़ भी लीजिए
गीता, पुराण, बाईबिल, कुरान हैं बेटियाँ
बेटे तो अपने माता-पिता को छोड़ देते हैं अकेले
लेकिन बेटियाँ माता-पिता की लाठिया और सहारा हैं
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को
दोनों कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ
कोई नहीं है दोस्तों एक दूसरे से कम
हीरा अगर हैं बेटा तो मोती हैं बेटियाँ

प्रिया जैन
B.Sc. VI Sem. (PCM)

कविताएँ

''काँप उठी, धरती माता की कोख''
कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख,
समय-समय पर प्रकृति
देती रही कोई न कोई चोट
लालच में इतना अंधा हुआ
मानव को नहीं रहा कोई खौफ
कहीं बाढ़, कहीं पर सूखा
कभी महामारी का प्रकोप
यदा कदा धरती हिलती
फिर भूकम्प से मरते वे मौत,
मंदिर मस्जिद और गुरूद्वारे
चढ़ गए भेंट राजनीतिक के लोभ
बन सम्पदा, नदी, पहाड़, झरने
इनको हरा रहा इंसान हर रोज,
सबको अपनी चाह लगी है
नहीं रहा प्रकृति का अब शौक
''धर्म'' करे जब बाते जनमानस की
दुनिया बालों को लगता है जोक,
कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख।।

माँ

माँ,
हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ .....
कभी डाँटती है हमें, तो कभी गले लगा लेती है माँ .....
हमारी आँखों के आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ .....
अपने होठों की हँसी हम पर लुटा देती है माँ .....
हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ .....
जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरंत याद आती है माँ .....
दुनिया की तपिश में, हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ .....
खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ .....
प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ .....
बात जब भी हो एजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ .....
रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ .....
लब्जों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ .....
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते है, ऐसी होती है माँ .....।।

फूल

हमें तो जब भी कोई फूल नजर आया है,
उसके रूप की कशिश ने हमें लुभाया है,
जो तारीफ ना करे कुदरती करिश्मों की
क्यों हमने फिर मानव का जन्म पाया है।।

अंजली कोरी
B.Com. II Sem.

बीमार वाहन की आत्मकथा

खुशियों में, गम में,
हर एक, कदम में,
दिन में, रात में,
हर एक, बात में,
मैं तुम्हारे साथ था।
हमारे हाथों में, एक दूजे का हाथ था।।
बाजार से लानी हो सब्जी,
या लाना हो बाबू जी का पान।
दफ्तर कॉलोनी कॉलेज में,
जिससे बढ़ती है तुम्हारी शान।।
मैं हूँ बेहद बीमार,
मुझे भी ले चलो डॉक्टर बाबू के पास।
तुम पर है मुझे पूरा विश्वास,
तुम हो मेरी आखिरी आस।।
हवा, तेल, पेट्रोल का, मेरे जरा रखो ख्याल।
धुआँ मैं ज्यादा फेक रहा हूँ,
करवा दो मेरी जाँच-पड़ताल।।
मुझे तुम्हारी खुद से ज्यादा फिकर है।
क्योंकि बीमार मेरे इंजन का जिगर है।।
माँ कहती हैं घर जल्दी आना,
देखो इसे तेज ना चलाना।
मुझे धुयें से है तुम्हें बचाना,
भगवान अपनी शक्ति से इस धुएँ को हटाना।।
डर लगता है घर कैसे,
सही सलामत तुम्हें पहुँचा पाऊँगा ?
सड़कों और चौराहों की,
धुंधली आँख मिचौली में से,
तुम्हें कैसे बचा पाऊँगा ??
अपने स्वास्थ्य के जैसे, रखा होता काश!
हमारा भी ख्याल।
धुएँ के प्रदूषण से, दिल्ली-बम्बई,
देश दुनिया का न होता ऐसा बुरा हाल।
और प्रदूषण बढ़ गया तो,
हमें चलाना मुश्किल होगा प्यारे।
धरे रहेंगे ये बस, ट्रेक्टर, बाइक और
धरे रहेगी, तुम्हारी प्यारी स्कूटी कारें।।
अपने स्वास्थ्य और हमारे स्वास्थ्य का,
मिलाओं ताल से ताल।
गली नुक्कड़ चौराहों पर,
खुले है हमारे अस्पताल।।
भईया पप्पू पंचर वाला हो,
या हो साहनी मिस्त्री निराला।
इनके पास खुल जायेगा,
हमारी हर बीमारी का ताला।।
घबराता हूँ तू मुझसे,
कहीं ना खो जाये।
तेरी लापरवाही से, धरती पर तू ही न रह पाये।।
मुझे ले चल डॉक्टर के पास,
यही है मेरी ईमानदारी का हिस्सा।
वरना मेरी बीमारी से, रह जायेगा,
प्यारे सिर्फ मानव जाति किस्सा।।

यशवंती सुमन
M.A. II Sem.
भूगोल

समय का महत्व

एक सैकेण्ड का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जो दुर्घटना में बाल-बाल बचा हो
एक मिनिट का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जिसकी बस या ट्रेन एक मिनिट की देर के कारण छूट गई हो
एक घण्टे का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जो एक घण्टे से किसी का इंतजार कर रहा हो
एक दिन का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जो 29 फरवरी को जन्मा हो
एक सप्ताह का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जो साप्ताहिक पत्रिका निकालता हो
एक माह का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जो एक माह से बीमार होने के कारण
उन्नति का सुनहरा अवसर खो चुका हो
एक साल का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जो वार्षिक परीक्षा में फेल हो गया हो
जीवन का महत्व उस व्यक्ति से पूछिए
जिसने अपना सारा जीवन व्यर्थ कर दिया हो।

डिम्पल सेन
B.Com. II Sem.

स्वच्छता अभियान

स्वेच्छा जैन
B.Com. II Sem.

मैं नहीं तू, तू नहीं मैं
सदा ही करते, तू तू मैं मैं
करो कभी कोई अच्छा काम
बढ़ाये जो, भारत देश का नाम
देश की धरोहर पर है, सबका अधिकार
फिर क्यूं है इसकी सफाई से इनकार
नहीं है कोई बहुत बड़ा उपकार
बस करना है जीवन में बदलाव
शहर को मानकर घर अपना
निर्मल स्वच्छ हैं, उसे भी रखना
कूड़ेदान में फेंको कूड़ा
थूकने को नहीं है धरती मैया,
बदलो अपनी आदत भैया
न करो किसी पड़ौसी का इंतजार
देश है, सबका, बढ़ाओ स्वच्छता अभियान
"मेरा शहर साफ हो
इसमें हम सब का हाथ हो"
स्वच्छता में ईश्वर बसा होता है।

जिन्दगी

"जिन्दगी" बदलने के लिए लड़ना पड़ता है .....
और आसान करने के लिऐ समझना पड़ता है .....
"वक्त" आपका है, चाहो तो सोना बना लो .....
और चाहो तो सोने में गुजार दो .....।
अगर कुछ अलग करना है तो भीड़ से हटकर चलो।
भीड़ साहस तो देती है पर पहचान छीन लेती है,
मंजिल न मिले तब तक हिम्मत मत हारो
और न ही ठहरो ..... क्योंकि
पहाड़ से निकलने वाली नदियों ने आज तक
रास्ते में किसी से नहीं पूछा ..... कि
समुन्दर कितना दूर है।

"रिश्ते"

वो "रिश्ते" बड़े ही प्यारे होते हैं।
जिनमें न हक हो न ही शक हो
न अपना हो न पराया हो
न दूर हो न पास हो .....
न जात हो न पात हो .....
सिर्फ अपने-पन का अहसास हो।

स्वेच्छा जैन
B.Com. II Sem.

बेटियाँ

सबकी शान होती हैं बेटियाँ
सभी का अभिमान होती हैं बेटियाँ
जाने लोग क्यों बेटियों को अभिश्राप समझते हैं
ये तो बहुत दयावान होती है बेटियाँ
घर की जान देश का मान रखती हैं बेटियाँ
सब कुछ सहकर चुप रहती हैं बेटियाँ
न जाने इतनी सहनशील कैसे होती हैं बेटियाँ
कल को संवारती हैं बेटियाँ
दो परिवार को संवारती हैं बेटियाँ
पर न जाने कुछ लोग बेटियों को क्यों नहीं संभालते
फूल बनकर मुस्कुराती हैं बेटियाँ
मुस्कुराकर गम भुलाती हैं बेटियाँ
जीतकर कोई खुश हुआ तो क्या हुआ
हार कर भी खुशियाँ मनाती हैं बेटियाँ

शबनम बानो
M.A. IV Sem.

नारी तुम पर नाज है

"जन्म तुम्हें जो देती है।
क्यों जिन्दा उसी को जलाते हो, ।।2।।
चूड़ी पहनती है औरत पर तुम क्यों
खनखनाते हो, ।।2।।
मत समझो उसे पैर की जोती
वह तो सिर का ताज है। ।।2।।
आने वाला समय कहेगा,
नारी तुम पर नाज है।
नारी तुम पर नाज है,
नारी तुम पर नाज है।"
"नारी-नारी क्यों कहते हो,
नारी जग की शान है। ।।2।।
नारी से पैसा हुए
राम कृष्ण भगवान है।" ।।2।।

रागिनी पटैल
B.Com. II Sem.

माँ

माँ ईश्वर की सूरत है
माँ ममता की मूरत है
माँ शांति का प्रतीक है
माँ स्पष्ट और सटीक है
माँ से बढ़कर कोई नहीं
माँ सा दुनिया में कोई नहीं
जिस घर ने माँ को पूजा है
वह स्वर्ग धरती परइजा है
माँ एक सरल पहेली है
क्योंकि होती सबकी सहेली है
माँ को नहीं देना कोई भी दुख
माँ देती हमेशा सबको सुख
माँ को न पाप सो जान
है दुनिया से भी वह अंजान
माँ होती सबकी पहली गुरू
उससे है दुनिया सब की शुरू
चोट मुझे लगे तो दर्द उसे होता है
मेरी हर परीक्षा उसकी अपनी होती है
माँ दुनिया से सामना करने की शक्ति देती है
जो साया बनकर हर कदम पर मेरा साथ देती है
वास्तव में माँ का कोई विस्तार नहीं
मेरे लिए माँ से बढ़कर कुछ भी नहीं।

पूजा साहू
M.A. IV Sem.

कोशिश कर

कोशिश कर हल निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन से तीर सा सध,
मरूस्थल से भी जल निकलेगा
मेहनत कर पौधों को पानी दे।।
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे।
फौलाद का भी पल निकलेगा।
जिन्दा रख दिल में उम्मीदों को।
गरल का समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कल गुजरने की।
जो है आज थमा-थमा सा चल निकलेगा।।

प्रीति रजक
B.Com. IV Sem.

"गुरु की महिमा"

गुरू को सारे जग में, सबसे ऊपर है माना,
गुरू की महिमा मुश्किल है, कागज में लिख पाना।
ज्ञान का दीप जलाकर जो, जीने की राह दिखाते,
उनका आशीष पाकर हम, अपनी मंजिल पाते
माली बनकर सीजते, जो ज्ञान का जमन,
उन गुरूओं को मेरा सौ-सौ बार नमन
हम अपने गुरूओं का, कैसे कर्ज चुकायेंगे,
ज्ञान की यह रोशनी सारे, जग में हम कैसे जायेंगे।

पूजा साहू
M.A. IV Sem.

माँ

घुटनों से रेंगते-रेंगते कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाव में जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका, दूध-मलाई आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह प्यार ये तेरा कैसा है।
सीधा-साधा, भोला-भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा "माँ" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

सौम्या सेतिया
B.Sc. IV Sem.

"स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत"

स्वच्छ रहे ये देश हमारा।
स्वस्थ रहे ये देश हमारा।।
1. तन से भी और मन से भी,
भारत में स्वच्छता आयेगी।
लोगों की जिम्मेदारी ही,
भारत को स्वस्थ बनायेगी।।
2. स्वास्थ हमारा ही धन है,
वहीं हमारी पूँजी है।
देश को स्वच्छ बनाने की,
सबसे बड़ी चुनौती है।।
3. धर्म यही है कर्म यही है,
देश को स्वच्छ बनाना है।
देश को स्वच्छ बनाकर ही स्वस्थ रखना है,
भारत को सोने की चिड़िया का पद वापिस दिलवाना है।।

स्वाति दुबे
B.Sc. VI Sem.

मेरे पापा

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा।
चलते चलते थक गई कंधे पर विठा लो न पापा
अंधेरे से डर लगता है
सीने से लगा लो न पापा।
मम्मी तो सो गई
आप ही थपकी देकर सुला दो न पापा।
स्कूल तो पूरी हो गई
अब कालेज जाने दो न पापा।
पाल पोसकर वड़ा किया
अब जुदा तो मत करो न पापा।
अब डोली में विठा ही दिया है
आँसू तो मत वहाओ न पापा।
आप की मुस्कुराहट अच्छी है
एक वार मुस्कुराओ न पापा।
आपने मेरी हर वात मानी
एक बात और मान जाओ न पापा।
इस धरती पर बोझ नहीं मैं
दुनिया को समझाओ न पापा।

साक्षी सेतिया, B.Sc. II Sem.

है माँ .....

हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ .....
कभी डाँटती है, हमें, तो कभी गले लगा लेती है, माँ .....
हमारी आँखों के आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ .....
अपने होठों की हँसी, हम पर लुटा देती है माँ .....
हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ .....
जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरंत याद आती है माँ .....
दुनिया की तपिस में हमें आँचल की शीतल छाया देती है, माँ .....
खुद चाहे किसी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ ...
प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ .....
बात जब भी हो लजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ .....
रिश्तों की खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ .....
लब्जों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ .....
और भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं।
यह मेरी मौलिक रचना है।

राजेश्वरी पटैल
B.Com. II Sem.

श्रद्धा ठाकुर
M.Sc. (Zoology)
IV Sem.

सीखना है तो यह सीखो

बोल सको तो मीठा बोलो,
कटु बोलना मत सीखो।
बता सको तो राह बताओ,
पथ भटकाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ,
दिल जलाना मत सीखो।
लगा सको तो बाग लगाओ,
आग लगाना मत सीखो।
कमा सको तो पुण्य कमाओ,
पाप कमाना मत सीखो।
छोड़ सको तो पाप छोड़,
चरित्र छोड़ना मत सीखो।
पा सको तो प्यार पाओ,
तिरस्कार पाना मत सीखो।
रख सको तो विद्या रखो,
बुराई को रखना मत सीखो।
पोंछ सको तो आंसू पोंछो,
दिल को दुखाना मत सीखो।
हँसा सको तो सबको हँसाओ,
किसी पे हँसना मत सीखो।
बना सको तो मित्र बनाओ,
शत्रु बनाना मत सीखो।

कर्म युग

ये युग है कर्म प्रधान
श्रम से मंजिल पाना है
धैर्य लगन व साहस से
तुम्हें आगे बढ़ते जाना है
मत आँको खुद को कम करके
तुमको परचम लहराना है
तुम क्या हो क्या कर सकते हो
दुनिया को दिखलाना है।
विश्व रखो तुम अपने पर
तुम जो चाहो कर सकते हो।
हर सपने को तुम
अपने श्रम से पूरा कर सकते हो।

कंचन विश्वकर्मा
M.Sc. IV Sem. Botany

स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत

प्रधानमंत्री जी हम कैसे बनाए आपका स्वच्छ प्रदेश

1. हम कहते हैं शौचालय में जाओ
   वो जाते हैं खेत
   मोदीजी हम कैसे बनाए आपका
   स्वच्छ प्रदेश
2. घूँघट के अन्दर का सोचा और
   दिलाया न्याय
   उज्जवला सुरक्षा योजना से बचा
   लिया वन विनाश
   महिलाओं के जीवन का बदल
   दिया परिवेश
   मोदीजी हम कैसे बनाएँ आपका
   स्वच्छ प्रदेश
3. कचरा डाले कूड़ेदान में
   स्वच्छ करें परिवेश
   पीकदान में थूके यही रहे आदेश
   धूम्रपान से छुटकारा पाएँ
   और संवारे वेश
   मोदीजी हम कैसे बनाएँ आपका
   स्वच्छ प्रदेश
4. पॉलीथीन को छोड़कर
   उपयोग करो कपास
   वरना कैसे कर पायेंगे
   पर्यावरण का विकास
   नयप्रवर्तन से नई दुनिया में कर
   जाओ प्रवेश
   मोदीजी हम कैसे बनाएँ आपका
   स्वच्छ प्रदेश
5. अब तो नोटों पर भी लिख दिया
   स्वच्छ भारत, स्वच्छ प्रदेश
   कुछ नेताओं का तो अब भी है वही वेश
   शौचालय के नाम पर हुआ है मंत्रीजी लूट
   आधा-अधूरा काम कराकर, पूरा बजट किया पेश
   मोदीजी हम कैसे बनाएँ आपका
   स्वच्छ प्रदेश
6. नालियों की हो नियमित सफाई
   मच्छरों की भी हो धुलाई
   कचरा डालने के लिए कचरा गाड़ी चलाई
   सिंगापुर से साफ हो सिटी हमाई
   घर महके आँगन महके और
   महके यह देश
   मोदीजी हम कैसे बनाएँ आपका
   स्वच्छ प्रदेश

हेमलता चढ़ार
B.A. I Year II Sem.

हम हमेशा दोस्त रहेंगे

हर खुशी तकलीफ, साथ-साथ जीया करते थे,
हार हो या जीत एक-दूसरे का साथ दिया करते थे,
कभी तुम हमसे कभी हम तुमसे रूठ जाया करते थे,
फिर हम तुम्हें और कभी तुम हमें मना लिया करते थे,
एक दूसरे की हम खुद से ज्यादा परवाह किया करते थे,
बस कल ही की बात लगती है
हम तुम अपनी दोस्ती पर कितना इतराया करते थे।
यकीन नहीं होता वक्त साथ हालात इतने बदल जायेंगे।
हम अपनी अपनी दुनिया में इस कदर खो जायेंगे।
एक-दूसरे की जिंदगी में बस याद बनकार रह जायेंगे।
खैर हम ना तुमसे, ना जिंदगी से कोई शिकायत करेंगे।
बस इस यकीन को हमेशा दिल में कायम रखेंगे।
जब भी दिल से पुकारेंगे, तुम्हें अपने पास पाएँगे।।

सारिका दक्ष
B.Com. IV Sem.

बस एक कदम और .....

बस, एक कदम और इस बार किनारा होगा
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा
अम्बर के नीचे उस बदली के पीछे कोई तो किरण होगी।
इस अन्धकार में लड़ने को कोई तो इशारा होगा ।।
बस, एक पहर और इस बार उजाला होगा।
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।।
जो लक्ष्य को भेदे वो कहीं तो तीर होगा।
इस तपती भूमि में कहीं तो नीर होगा।।
बस, एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा।
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कहीं तो राह होगी।
अपने मन को टटोलो, कोई तो चाह होगी।।
जो मंजिल तक पहुँचे, वो कदम हमारा होगा।
बस एक कदम ... और इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और हर तरफ नजारा होगा ।।

नीलम विश्वकर्मा
B.Com. IV Sem.

शिक्षक ये कहलाते हैं

ईशा द्विवेदी
B.Sc. II Sem.

रोज सुबह मिलते हैं इनसे, क्या हमको करना है 'ये'
बतलाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
ले के तस्वीर इन्सानों की सही-गलत का भेद हमें 'ये'
बतलाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
कभी डांट तो कभी प्यार से कितना कुछ हमको 'ये'
समझाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
है, भविष्य देश का जिनमें उनका सबका भविष्य 'ये'
बनाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
हार-हार के फिर से लड़ना ही जीत है जिन्दगी ऐसा एहसास 'ये'
करवाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
है रंग कई इस जीवन में, रंगों की दुनिया से पहचान 'ये'
करवाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
खो न जाएं भीड़ में कहीं हमको हमसे ही
मिलवाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
कोशिश करते रहना जीवन का अर्थ है हमें 'ये'
बतलाते हैं ..... शिक्षक ये कहलाते हैं।
देते हैं नेक मंजिल भी हमें राह भी बेहतर हमें 'ये' दिखलाते हैं
देते हैं ज्ञान जीवन का काम यही सब है इनका
शिक्षक ये कहलाते हैं।

पैसा की महिमा

पैसा है महाप्रतापी, पैसा है सर्वव्यापी
पैसा की महिमा साँची, पैसा ही मथुरा काशी
पैसा है अन्तर्यामी, पैसा है सबका स्वामी
पैसा से कर लो प्यार पैसा ही जीवन का साया।
पैसा का कर लो गुणगान, पैसा ही सबका भगवान
पैसा से चलता ईमान, पैसा से मिलता सम्मान
पैसा है बड़ा बेईमान, पैसा करवाता अपमान
पैसा सब गुणों की खान, पैसा से व्यवहार और ज्ञान।।
पैसा करवाता है लड़ाई, पल में पैसा करे भलाई
पैसा ही बाप मताई, धन्य है पैसा तुझे दुहाई
पैसा से चलता बाजार, पैसा से तीज़ त्यौहार
पैसा कलयुग का अवतार, पैसा में सारा संसार।।
पैसा से है सेठ सिपईया, पैसा धरमपुरी का पहिया
पैसा से सबकी नैया, पैसा बिना है हाँ-हाँ दैया
पैसा है कृष्ण कन्हैया, पैसा नाचे था-था थैया
पैसा पल में बने सहैया, पैसा डुबो देता है नैया।।

मैं कहती हूँ सुनले पैसा, मेरे लिये तू तुच्छ है पैसा
मेरी मेहनत मेरा पैसा, जहाँ घुमाऊ घूमे पैसा
मैं जब चाहूँ आये पैसा, राह बताऊ जाये पैसा
समझ गया मैं कर्म है पैसा, किये कर्म का फल है पैसा।।
कर ली अपनी नींद हराम, भूख चैन शांति स्वास्थ्य
बेचकर अपना स्वाभिमान, गिरवी रखकर गिरेवान
खोया प्यारा घर व सच्चा प्यार, पैसा नहीं है सब कुछ यार
मूर्ख बना पागल इंसान, खोद रहा कब्रिस्तान।।
आजकल ऐसा है पैसा, जहां देखो पैसा ही पैसा
कहीं कहीं न्याय है पैसा, कहीं कहीं अन्याय है पैसा
सत्य है पैसा झूठ है पैसा, सब कोई चाहे पैसा पैसा
जेब से निकल जाये जब पैसा, ऐसा लगता है कहां है पैसा।
फिरता दौड़ लगता पैसा, आता और जाता पैसा
बैंकों में घुस जाता पैसा, भारी चक्कर लगता पैसा
नाते रिश्तेदार है पैसा, समझ लो तूफान है पैसा
ऐसा वैसा नहीं है पैसा, अपनी जगह पर सही है पैसा।।

संध्या पटैल
B.Com. II Sem.

भारत में स्वच्छता अभियान

स्वच्छता एक सामाजिक आवश्यकता है।
सीमा पर लड़ना ही नहीं है देशभक्ति का नाम,
स्वच्छ बने देश करो ऐसा काम।

माननीय नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक बड़ा कदम हो सकता है। हर भारतीय नागरिक का एक छोटा सा कदम। रोजमर्रा के जीवन में हमें अपने बच्चों को साफ सफाई के महत्व और इसके उद्देश्य को सिखाना चाहिए।

स्वच्छ भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ-सुथरा करना है यह अभियान महात्मा गाँधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर 2014 को आरंभ किया गया, महात्मा गाँधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ठ संदेश दिया था।

'स्वच्छता एक क्रिया है।' स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है जो हमें दवाब में करना पड़े। यह एक ऐसा तरीका है। जिससे हमें अपने शहर को स्वच्छ व स्वस्थ बना सके। अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता जरूरी है। स्वच्छता के लिए कहीं की या किसी की जगह को देखकर नहीं की सकती है। स्वच्छता के लिए किसी भी जगह को नहीं चुना है और कहीं भी या किसी भी जगह पर कचरा या गन्दगी फैली हो तो उसे साफ करना चाहिए।

जिससे हमारा शरीर, दिमाग, कपड़े, घर के आसपास और कार्यक्षेत्र साफ और सुथरे रहते हैं। हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए साफ-सफाई बेहद जरूरी है। अपने आसपास के क्षेत्रों और पर्यावरण की साफ-सफाई सामाजिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के बहुत जरूरी है। हमें साफ-सफाई को आदत में लेना चाहिए गन्दगी को हर जगह हटा देना चाहिए क्योंकि गंदगी वह जड़ है जो बीमारियों को जन्म देती है, जो नहाता, गंदे कपड़े पहनता, अपने घर या आसपास वातावरण को गंदा रखता है तो हमेशा बीमार रहता है। गंदगी से आसपास के क्षेत्रों में कई तरह के कीटाणु, बैक्टीरिया वायरस तथा फंगस आदि पैदा होते हैं जो बीमारियों को जन्म देती है जिन लोगों गन्दगी आदतें होती हैं वो भी खतरनाक और जानलेवा बीमारियों को फैलाना है संक्रमित रोग बड़े क्षेत्रों में फैलते हैं और लोगों को बीमार करते हैं कई बार इसमें मौत हो जाती है इसलिए हमें नियमित तौर पर अपनी स्वच्छता ध्यान रखना चाहिए।

"महात्मा गाँधी का है सपना,
भारत स्वच्छ हो अपना।"

<u>स्वच्छता का महत्व</u> - स्वच्छता से हमें बहुत प्रकार का महत्व प्राप्त होती है। स्वच्छता के लिए किसी जगह को नहीं चुना जा सकता क्योंकि स्वच्छता चाहे व्यक्तिगत हो अपने आसपास की पर्यावरण की पालतू जानवरों की या काम करने की जगह (स्कूल, कॉलेज) आदि हो। हमें सभी को जागरूक करना चाहिए। हमें स्वच्छता से कभी समझौते नहीं करना चाहिए। अपनी रोजमर्रा की आदतों में स्वच्छता को लाना आसान होता है। क्योंकि यदि स्वस्थ रहना है तो इसके पहले स्वच्छता को अपनाना आवश्यक है।

हमें बचपन से स्वच्छता की आदत को अपनाना चाहिए पूरे जीवन भर उसका पालन करना चाहिए एक व्यक्ति अच्छी आदत के साथ अपने बुरे विचारों और इच्छाओं को खत्म कर सकता है। घर या अपने आसपास संक्रमण फैलने से बचाने व गंदगी के पूर्ण निपटान के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए गंदगी को केवल कूड़ादान में डाले साफ-सफाई केवल एक व्यक्ति जिम्मेदारी नहीं है बल्कि ये घर समाज, समुदाय और हर नागरिक की जिम्मेदारी है हमें उसके महत्व और फायदे को समझाना चाहिए हमें भारत को स्वच्छ रखने कसम खाना चाहिए न हम खुद करेंगे न किसी करने देंगे। स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है जो पैसा कमाने के लिए किया जाए बल्कि जो व्यक्ति या महिला कचरे उठाने का कार्य करते हैं, उन्हें सम्मान देना चाहिए वह अपने देश को साफ सुथरा बनाकर उन्हें सुन्दर बना रहे हैं।

<u>स्वच्छता से लाभ</u> - स्वच्छता से हमें कई प्रकार के लाभ होते हैं जैसे यदि हम स्वच्छ रहेंगे तो हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा। और जब हम स्वस्थ रहेंगे तो हमारा मन सुन्दर व साफ रहेगा इसलिए हमें अपने आसपास स्वच्छता रखनी चाहिए। घर का सारा कचड़ा कूड़ादान या किसी भी गड्ढे को खोदकर उसमें डालना चाहिए। स्वच्छता से हमें बहुत लाभ होते हैं। जैसे हमें किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होगी और हर जगह साफ सुथरा रहेगा और पर्यावरण

"पिता का साया है, तो जीवन में सब पाया है।"

कहते हैं कि माता-पिता के चरणों में स्वर्ग होता है और यह सच भी है। माता पिता की महिला का गुणगान कर-करके कवि थक गए है पर उनकी महिमा को बयां नहीं कर पाए। माँ जो अपने बच्चे को जन्म देती है और पिता उसका पालन पोषण करता है। माँ के बारे में तो कई किताबें लिखी गई है लेकिन पिता, पिता के बारे में कुछ नहीं लिखा गया। माता-पिता अपनी बच्चे को उंगली पकड़कर चलना सिखाते हैं और अंतिम क्षण तक उसका साथ नहीं छोड़ते।

पिता उस आसमान की तरह होता है, जिसका कोई अन्त नहीं। पिता का साया है तो सब नहीं है, दुनिया अच्छी है, लेकिन जब पिता एक पल के लिए आँखों से दूर चले जाते हैं, तो सारी दुनिया बिखरी सी लगती है। एक पिता ही सदैव अपने बच्चों को बाहरी दुनिया का सामना करना तथा बाहरी दुनिया में जीना सिखाते हैं। पिता सारे गम झेलकर भी अपने बच्चों का पालन पोषण करता है लेकिन अपने चेहरे पर शिकन तक नहीं आने देता परन्तु अन्दर कई दुख छिपे रहते हैं। पिता का स्वभाव कभी खट्टा तो कभी मीठा होता है। यह अपने स्वभाव से जीवन जीने की कला सिखाते हैं। पिता छोटे से परिन्दे का बहुत बड़ा आसमान होता है। अगर पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने है। अगर पिता है तो माँ की बिन्दी और सुहाग है। इसीलिए सच ही कहा गया है कि "पिता सुरक्षा है अगर सिर पर हाथ है। पिता नहीं है तो जीवन अनाथ है।"

पिता का सबसे अधिक लगाव अपनी बेटियों से होता है क्योंकि वे चंचल, सौम्य और कोमल होती हैं। बेटी का कोमल मन अपने पिता की सीख रूपी आधार को पाकर ही पूर्ण स्वरूप प्राप्त करता है। पिता की हर सीख अमूल्य होती है। जैसे ही पिता का हाथ सिर पर होता है तो ऐसा लगता है मानो जीवन की सारी खुशियों अपने पास है, जीवन की सारी सफलताएँ बस मिल ही गई है।

"पिता ऐसा शब्द जिसकी महिमा अपार है, इसी में समाया बच्चों का सारा संसार है।"

जब हम अपने माता-पिता करेगे और उनका हमारे जीवन मूल्य लेंगे तब हमारा जीवन सफल हो जाएगा। दुनिया की सारी सफलताएँ प्राप्त हो जाएगी।

"पिता के बिना बच्चों का संसार अधूरा है, यदि है साथ पिता का तो यह जीवन पूरा है।"

पूजा विश्वकर्मा
B.Com. IV Sem.

अवसर

एक बार एक कलाकर ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाई। उसे देखने के लिए नगर के सैकड़ों धनी-मानी व्यक्ति भी पहुँचे। एक लड़की भी उस प्रदर्शनी को देखने आई, उसने देखा, सब चित्रों के अंत में एक ऐसे मनुष्य का चित्र टँगा है, जिसके मुँह को बालों से ढँक दिया गया है और जिसके पैरों पर पंख लगे थे। चित्र के नीचे बड़े अक्षरों में लिखा था - 'अवसर'। चित्र कुछ भद्दा सा था इसलिए लोग उस पर उपेक्षित दृष्टि डालते आगे बढ़ जाते।

लड़की का ध्यान प्रारंभ से ही इस चित्र की ओर था। जब वह उसके पास पहुँची तो उसने चुपचाप बैठे कलाकार से पूछ ही लिया "श्रीमान जी! यह चित्र किसका है ?"

"अवसर का" - कलाकार ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया। "आपने इसका मुँह क्यों ढँक दिया है ?" लड़की ने दोबारा प्रश्न किया। इस बार कलाकार ने विस्तार से बताया - "बच्ची! प्रदर्शनी की तरह अवसर हर मनुष्य के जीवन में आता है और उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, किन्तु साधारण मनुष्य उसे पहचाना तक नहीं, इसलिए वे जहाँ थे वहीं पड़े रह जाते हैं, पर जो अवसर की पहचान लेता है, वही जीवन में कुछ काम कर जाता है।"

"और इसके पैरों में पंखों का क्या रहस्य है ?" लड़की ने उत्सुकता से पूछा। कलाकार बोला - "यह जो अवसर आज चला गया, वह फिर कभी नहीं आता ?"

लड़की इस मर्म की समझ गई और इसी क्षरण से अपनी उन्नति के लिए जुट गई।

शिवानी सोनी
M.Sc. IV Botany

स्वच्छ भारत

सीखो और बढ़ो, सोचो और समझो

यह लेख हमारे देश पर आधारित है, जो देश के कुछ पहलुओं को समझ कर लिखा गया है।

जैसा कि हम जानते हैं, किसी भी व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं है, कि वह अकेले ही अपने देश का विकास कर सके, लेकिन आजादी के बाद लोगों में नई चेतना आई, देश को आगे बढ़ाने का विश्वास बढ़ा।

जब देश में ज्वाला भड़क पड़ी,
आजादी के परवानों कि सीमा झलक पड़ी,
लोग समझ गए अब क्या करना है
अपनी मिट्टी पर मर मिटना है।
हमने आजादी से पहले कितने जुल्म सहे,
लेकिन हमने अपनी एकता के बल से,
लोगों के साथ से एक जुट होकर देश में स्वतंत्रता प्राप्त कि।
जब आगे आए देश के स्वतंत्रता सेनानी,
तो कुछ लोगों ने छोड़ा साथ,
पर वो ना हुए अपने पथ से बैचेन,
वे चल पड़े कुछ के ही साथ,
वे बढ़ते गए, कारवां बनता गया,
और मंजिल को रास्ता मिल गया,
जब मिलकर लोगों ने लड़ा देशा,
और दिए कई बलिदान,
जब लोगों कि सोच में आए कई सुधार,
तो देश हुआ आजाद,
आजादी की खुशी में देश ने बनाए कई त्यौहार,
लोगों की एकता हुई साकार,
जब देश हुआ आजाद।

निशा कैथी
B.Sc. "CBZ" II Sem.

देश की आजादी के बाद फिर, उठे कई प्रश्न, अब देश को ऊँचे स्तर पर बढ़ने की योजनाएँ बन रही थी, कई मुद्दे उठे, कि अब आगे क्या करना है, अपने राष्ट्र को कैसे आगे बढ़ाना है, बहुत से पहलू सामने आए, बहुत से मुद्दे उठाए गए, उनमें से एक मुद्दा उठा ''स्वच्छ भारत'' का जो बड़ा ही बेचेन कर रहा था लोगों को, पर सबने इसे अपना कर्तव्य समझते हुए, इस पर चर्चा कि, लेकिन ''गाँधी जी'' ने इसे नई राह दी, उन्होंने इस विषय को उठाया, लोगों को जागरूक किया और इस पर कई आन्दोलन भी किए। वे अपनी बात पर अटल रहते थे और हमेशा अपना कार्य स्वयं करते थे, एवं अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ और साफ रखते थे, उनकी वजह से आज हम फिर इस विषय को उठा रहे हैं।

आज आजादी के कई साल बाद, हमारे देश के प्रधानमंत्री ''श्री नरेन्द्र मोदी जी'' ने इस विषय को फिर उठा दिया, गाँधी जी की तरह और लोग कुछ भूल गए थे उन्हें फिर जगा दिया। अब इतने सालों बाद, यह स्वच्छ भारत का विषय हमारे सामने आया है, जिसमें लोग बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं, इसके लिए कई प्रावधान लागू किए गए हैं, और कई योजनाएँ भी जिससे स्वच्छ भारत का सपना साकार हो, अब घरों के सामने कूड़ा-कचड़ा से दूर फेका जाता है एवं लोगों में अब कई प्रकार की, जानकारियों के प्रति जागरूकता बढ़ गई है, जिससे भारत स्वच्छ बने और जब भारत स्वच्छ बनेगा तभी तो सभ्य बनेगा।

''स्वच्छ भारत सभ्य भारत'', जब हम सोच ले कि, हम करें, अपने आस-पास का पग-पग कोंना साफ, तभी तो होगा स्वच्छ भारत का सपना साकार ।

तो आइए, हम उठाएँ अपने हाथ, देश को करे प्रणाम, करे उसका विकास और बनाएँ उसे विशाल।।

धन्यवाद

स्वच्छ मुद्रा स्वच्छ भारत

शिवानी साहू
B.Com. II Sem.

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा नोटबंदी (8 नवम्बर 2016, 8:17 पी.एम.) की साहसिक, अप्रत्याशित घोषणा ने सियासत एवं समानांतर अर्थव्यवस्था दोनों को साधने का कार्य किया है। इस एक स्ट्रोक में 1000 एवं 500 के नोटों (14180 अरब रू.) को खत्म कर प्रधानमंत्री ने मास्टरस्ट्रोक दाँव खेला है, जिसके प्रभाव की परीक्षा होना बाकी है, नकदी पर निर्भर इकोनॉमी वाले (10.86%) देश भारत में इस निर्णय को जहाँ कालाधन, भ्रष्टाचार, जालीनोट, हवाला एवं आतंकवाद पर एक साथ सर्जिकल स्ट्राइक माना जा रहा है, वहीं दूसरी तरह इसे अप्रभावी एवं आम जनता के लिए कष्टकारी (विपक्षी दलों) बताया गया। बैंकों एवं एटीएम के बाहर लम्बी लाइन तथा अफरा-तफरी की दशा ने सरकार की तैयारियों पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया है।

कालेधन को रोकने हेतु - प्रिवंशन ऑफ मनी लॉंड्रिंग एक्ट 2002
प्रिवेंशन ऑफ करप्सन एक्ट 1988
इनकम टैक्स एक्ट 1961
दोहरा कराधान निवारण संधियाँ, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ एक्साइज एण्ड कस्टम आदि।

कालाधन - ऐसी सम्पत्ति व संसाधन के रूप में इंगित किया गया, जो अपनी उत्पत्ति, प्रकटन अथवा प्राप्ति के समय सुसंगत सरकारी प्राधिकारिता को संसूचित न किया गया हो।

कालेधन पर जारी रिपोर्ट एवं HSBC बैंक पर छापे (17 फरवरी 2015) से सिद्ध है, कि इसका प्रयोग अब आपराधिक गतिविधियों के पोषण हेतु किया जा रहा है।

कालेधन के स्त्रोत :-

1. गैर कानूनी कृत्यों, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी।
2. अर्जित आय पर नियमानुसार देय सरकारी राजस्व को अदा न करने से जन्म लेता है।

कालाधन आज समानान्तर अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित है।

कालेधन के समाधान हेतु आवश्यक

1. वैश्विक स्तर पर कालेधन के विरूद्ध सक्रिय अभियान छेड़ते हुए, कर-चोरी से संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान सहित अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना।
2. देश में लागू विभिन्न करों की दरों को अधिक तर्क संगत बनाते हुए वित्तीय लेन-देन की लागत (जैसे पंजीयन व स्टाम्प शुल्क आदि) में कमी लाकर, वित्तीय लेन-देनों को गुप्त रखने की सामान्य प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना।
3. इलेक्ट्रानिक, इंटरनेट तथा आधुनिक संचार माध्यमों का अनुकूलतम उपयोग कर, शासकीय कार्य पद्धति को अधिक त्वरित, सुगम व पारदर्शी बनाना।
4. प्लास्टिक मनी के रूप में लोकप्रिय डेविट कार्ड/क्रेडिट कार्ड आदि के माध्यम से हुए वित्तीय लेन-देनों पर कर-राहत देकर, गुप्त लेन-देन की प्रवृत्ति को रोकना, गुड्स एंड सर्विस टैक्स (GST) जैसे नवीन कर-कानूनों का क्रियान्वयन तथा।
5. सर्वोपरि जनचेतना तथा जन सहभागिता के साथ-साथ विभिन्न राजनैतिक दलों में मतैक्य/स्थापित करते हुए कालाधन मुक्त राष्ट्र के निर्माण के लक्ष्य के साथ, इस वैश्विक समस्या का समाधान संभव है।

बेदर्द जमाना

श्रीमती वंदिनी जैन
एम.एच.एस-सी. IV सेम.

उलझनों से भरा जमाना, न कोई अपना न बेगाना
जबाव दे मुझे/इतना बेदर्द तू क्यों हो गया जमाना।
हर शख्स उत्तेजना और आक्रोश के वशीभूत
जैसे हर तरफ हो, जेठ की तपती धूप।।

जबाव.....
बरबादी का अफसाना बरबादी पर जश्न मनाना
कुछ ऐसे ही चलन से बंध गया है जमाना

जबाव.....
जो दिए खुशियों में जलते थे, अब भी जलते हैं,
घर के चिराग गुल होने पर मजबूरी में मातम लिए।

जबाव.....
कौन जाने सुबह से शाम के बीच वक्त का कौन सा झोंका
किसी के घर के दिए को, इस कदर बुझा देगा।
लाख सांत्वना डालने पर भी, वह कभी न जल पाएगा

जबाव.....
दुःख दर्द चीत्कार, सिसकियों से भरा, है तेरा क्रूर मधुर-संगीत
जिसमें किसी का कभी कोई, होता नहीं मीत।।

जवाव.....
तू है बड़ा जालिम इसकी देती हूं मैं दाद
लाख गिड़गिड़ाए कोई पर न सुनेगा तू फरियाद

जवाव.....
तू वदनाम न हो इससे ज्यादा अब और ये जमाना
ये मेरी तमन्ना, इसकी लाज तुम निभाना।
अव न और बेदर्द तू होगा ए जमाना।

संस्कार

आज आवश्यकता है जानने की, सुसंस्कारों को समझने की।
संतान को संस्कारित कर, प्रगति पथ पर लाने की।।
सुसंस्कृति न मिटने पाए, कुछ ऐसा कर दिखाने की,
जो पहचान हमारी खो रही, फिर से उसे बचाने की।।
मानव का मानवता से, पुनर्मिलन कराने की
संकल्प लें पुनः हम, "भारत" भविष्य बनाने की।।

''बाप की टोपी''

बाप की टोपी कपड़े की नहीं होती है
बेटी के जिस्म की बनी होती है
जहां-जहां बेटी जाती है
बाप की टोपी साथ जाती है।

टोपी का संबंध मात्र बेटी से हैं
बेटे को उससे कोई सहानुभूति नहीं
अंदर से बाहर से पुत्र चाहे कितना
ही काला होकर आता है टोपी
की सफेदी पर कोई अंतर नहीं आता।

वह तो बेटी है कि तिनका हिला नहीं
टोपी पहले मैली हो जाती है
तभी तो हर बाप अपनी बेटी से
कहता है कि बेटी टोपी की लाज रखना
भाई की होड़ मत करना।

वह तो वंश बेल है अमर बेल
की तरह इसी में उसकी शोभो है
बेटियां बेजुबान रहें इसी में
वे चरित्रवान होती हैं।

टोपी कभी नहीं फटती बेटियां मिटती हैं
क्योंकि टोपी की सुरक्षा को हजारों
बेटियां कम पड़ती हैं
और यह सिलसिला अंतहीन होता है
वंश सुख की नींद सोता है।

प्रहरियां टोपी की लाज रखती हैं
फिर भी वे पराई कही जाती हैं
रखती हैं बेटियां टोपी की लाज
पहनते हैं बेटे टोपी का ताज।

हेमलता कश्यप
एम.एच.एस-सी. II सेम.

बुरा मत सोचो

दो व्यापारी कहीं जा रहे थे। रास्ते में रात हो गई। रात बिताने के लिए वे पास के एक गांव में पहुंचे। वहां के पटेल के घर जाकर उन्होंने आश्रय मांगा, पटेल ने आश्रय दे दिया। दोनों व्यापारी थे और अपना माल बेचकर लौट रहे थे उनके पास रुपयों से भरी थैली थी, जिसे देखकर पटेल की नीयत बिगड़ गई। उसने यात्रियों का सत्कार कर उन्हें सोने के लिए पलंग दिया और अपने मकान के भीतर चला गया। वहां उसने दो बदमाशों को बुलाकर उनसे बात की कि मेरे दरवाजे पर दो आदमी सो रहे हैं, उन्हें रात में मार दो, तुम्हें तगड़ा इनाम दूंगा। बदमाश मान गए ।

पटेल के दो पुत्र थे, जो रात्रि में खेत में चले गए थे किन्तु किसी कारणवश वे दोनों घर लौट आए।

देर अधिक हो जाने से उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया उचित नहीं समझा किन्तु बाहर पलंग पर दो अपरिचितों को सोता देख उन्होंने उन्हें पशुशाला में जाकर सोने को कहा। व्यापारी उठकर पशुशाला में सो गए और पलंग पर पटेल के पुत्र लेट गए। रात्रि में बदमाश आए और पटेल के पुत्रों को व्यापारी समझकर मार दिया। सुबह दोनों व्यापारी उठे और पटेल से विदा लेने आए तो पुत्रों की लाश देखी। दोनों ने पटेल को जगाया। पटेल ने अपना सिर पीट लिया।

सार यह है कि दूसरों का बुरा सोचने वाला स्वयं ही अपनी गलत सोच का शिकार होता है क्योंकि बुरे कार्य का परिणाम भी बुरा ही होता है। अतः क्षुद्र निजी स्वार्थों को छोड़कर सभी के बारे में अच्छा सोचें।

कविता

अपनी तो हो गई परीक्षा
पास-फेल ईश्वर की इच्छा।
हमने की थी खूब पढ़ाई
रात-रात भर चिटें बनाई
विद्यालय में खरा था फेरा
हमें लगा था धक्का गहरा।
चिटें जेब में कूद रहीं थीं
खाली कापी गूंज रही थी
सूझ न पाया हमको कुछ भी
चार लकीरें झट से लिख दीं।
ईश्वर-अल्ला तेरा नाम
टीचर सन्मति दे भगवान।
बंडल कापी पूरा गायब करके
रद्दी में बेचे भगवान।

दोस्ती की कली

दुनिया में दोस्ती खरीदने से नहीं मिलती
दोस्ती की कली हर एक के लिए नहीं खिलती
सच्ची दोस्ती किस्मत से है मिलती
पर ऐसी किस्मत हर एक को नहीं मिलती।

दोस्ती करो तो धोखा मत देना
दोस्त को कभी आंसुओं का तोहफा मत देना
कोई रोया करे आपकी याद करके
ऐसा किसी को मौका मत देना।

रश्मि जैन
बी.काम. VI सेम.

सफलता के सूत्र

हर व्यक्ति सफलता की ऊँचाईयों को छूना चाहता है और उसके लिए व्यक्ति संघर्ष भी करता है लेकिन कई बार वह असफल रहता है इसके लिए हमें कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है-

1. हमें दूसरों से वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, जैसा हम दूसरों से अपने लिए अपेक्षा करते हैं।
2. हमें बहादुर बनना चाहिए, कुछ नहीं तो बहादुर बनने का अभिनय करना चाहिए, बहादुरी हममें अपने आप ही जन्म ले लेगी।
3. हमें दूसरों की आशाओं का गला नहीं दबाना चाहिए, शायद वह उनके जीने का सहारा हो।
4. "जिज्ञासा ही ज्ञान की जननी है" यदि हमें किसी विषय के प्रति जिज्ञासा नहीं है अर्थात् उसे जानने की इच्छा नहीं है, तो हम सफलता को कभी हासिल नहीं कर सकते हैं।
6. हमें मेहनत का सदा सम्मान करना चाहिए।
7. असफलता मिलने से हमें निराश नहीं होना चाहिए। हमें प्रयत्न करना चाहिए। प्रयत्न करने से ही हमें सफलता हासिल होगी।
8. हमें कठिन से कठिन कार्य को असंभव नहीं समझना चाहिए।
9. हमें अपनी कमियों को दूसरों की मदद से ठीक करना चाहिए।
10. सफलता को हासिल करने के लिए हमें अपनी संगति को अच्छा करना होगा क्योंकि यदि संगति ठीक नहीं है तो व्यक्ति कभी भी सफलता की सीढ़ी तक नहीं पहुंच सकता है।

सोचना तो मुझे ही होगा

अंधेरा है हर रास्ते में,
पर चलना तो मुझे ही होगा।
मुश्किलें हैं, मुसीबतें हैं
पर जूझना तो मुझे ही होगा।
दिख रही है न कोई रोशनी
पर ढूंढ़ना तो मुझे ही होगा।
विपरीत परिस्थितियां हैं,
पर लड़ना तो मुझको ही होगा।
बिखर गयी है जिंदगी सारी
पर समेटना तो मुझे ही होगा।
क्या हो सकता है मुझसे
सोचना तो मुझे ही होगा।

कर्म प्रधान

युग है कर्म प्रधान, श्रम से मंजिल पाना है।
धैर्य लगन व साहस से, हमें बढ़ते जाना है।
मत आंको खुद को कम करके, हमको परचम लहराना है।
तुम क्या हो क्या कर सकते हो, दुनिया को दिखलाना है।
विश्वास रखो तुम अपने पर, हम जो चाहें कर सकते हैं।
हर सपने को हम-तुम, अपने श्रम से पूरा कर सकते हैं।

कु. रोशनी जैन
बी.एस.सी. II सेम.

सत्यवादी बालक

किसी गांव में एक लड़का अपनी मां के साथ रहता था, बालक बड़ा बुद्धिमान और गुणग्राही था। वह गांव के स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद आगे भी विद्याभ्यास करना चाहता था, किन्तु उस गांव में कोई बड़ा स्कूल न होने से वह बहुत चिन्तित हुआ। तब उसकी मां ने कहा बेटा यहां से 15 मील दूर के नगर में बड़े-बड़े स्कूल हैं यदि तुम वहां जाकर पढ़ना चाहते हो तो मैं तुम्हें वहां भेज दूंगी। लड़के ने प्रसन्न होकर मां से कहा कि मैं अवश्य ही वहीं पढ़ने जाऊंगा। अपने बेटे की उत्सुकता देखकर उसकी मां ने उसे नगर के स्कूल में भेजने की तैयारी कर दी। एक दिन जब गांव के कुछ लोग उसी नगर को जा रहे थे तो उस लड़के की मां ने अपने बालक को खर्च के लिए 50 रुपये देकर उन लोगों के साथ भेज दिया। जाते समय मां ने अपने लड़के से कहा, देखो बेटा तुम शहर तो जा रहे हो पर इतना अवश्य याद रखना कि कभी किसी से लड़ाई झगड़ा न करना और न कभी किसी से झूठ नही बोलना । लड़के ने अपनी माता की बात स्वीकार करते हुए कहा, "माँ तुम चिंता न करो, मैं वहां अच्छी तरह से रहकर विद्या प्राप्त करूंगा" इतना कहकर वह उन लोगों के साथ रवाना हो गया।

मार्ग में एक घना जंगल पड़ता था। जब वह लोग उसमें होकर निकले एक जगह अचानक उन्हें कुछ डाकुओं ने रोककर मारपीट की और उन लोगों का सारा सामान व रुपये पैसे छीन लिये। बालक यह दृश्य देखकर सहम गया और चुपचाप खड़ा रहा। एक डाकू ने उससे पूछा कि तेरे पास क्या है ? बालक ने उत्तर दिया कि मेरे पास 50 रुंपये हैं। डाकुओं ने समझा झूठ बोलता है इसके पास क्या होंगे रुपये। ऐसा सोचकर वे सब डाकू अपने सरदार के पास लूट का माल लेकर चले गये और उसको सारा किस्सा कह सुनाया। बालक के पास 50 रुपये की बात सुनकर सरदार बहुत नाराज हुआ और बोला उसे क्यों छोड़ दिया। जाओ शीघ्र ही उसे हमारे पास पकड़कर ले आओ। दो आदमी शीघ्र ही उसी ओर जाकर बालक सहित सभी लोगों को पकड़कर सरदार के पास ले आये और बालक को सामने खड़ा कर दिया। उसने बालक से पूछा-तेरे पास क्या है ? बालक ने निडर होकर रुपये सरदार को दिखाते हुए उत्तर दिया मेरे पास ये 50 रुपये हैं। बालक की इस निर्भयता और सच्चाई से सरदार बहुत ही खुश हुआ और बालक को बड़ी स्नेह दृष्टि से देखा। उसने अपने सहयोगियों से कहा कि इस बालक को और इसके साथियों को यथास्थान पहुंचा दो। साथ ही इनसे जो कुछ

सत्य पथ पर

चल पड़े हैं, सत्य पथ पर
हम सदा चलते रहेंगे।
रात हो कितनी अंधेरी,
दीप बन जलते रहेंगे।
लाख बाधाएं खड़ी हों या
घिरें काली घटाएं।
यह न संभव चल पड़े
जो पांव पीछे लौट जाएं।
गीत बनकर मुश्किलों के,
हिम शिखर गलते रहेंगे।
धार चंचल है समय की,
जो नहीं रोके रुकेगी।
प्यार के आगे घृणा की,
वंचना आकर झुकेगी
हर लहर को संग लेकर,
वेग से बढ़ते रहेंगे।
सबसे मिलेंगे नेह से,
संवेदना के फूल खिलेंगे
हमें विश्वास हम,
तूफान में बढ़ते रहेंगे।
चल पड़े हैं सत्य पथ पर;
हम सदा चलते रहेंगे।

संध्या ठाकुर
एम.ए. हिन्दी साहित्य

कामयाब बने रहे

क्या लक्ष्य हासिल करने के बाद आप मेहनत करना छोड़ देते हैं ? अगर हाँ तो यह कदापि अच्छे संकेत नहीं हैं। जब कामयाब होना होता है तब तो हम जी तोड़ मेहनत करते हैं लेकिन जैसे ही अपने लक्ष्य को पाते हैं हममें कुछ लापरवाही आ जाती है । आखिर हम उसी तरह परिश्रम क्यों नहीं करते जैसे पहले किया करते थे। यह बिल्कुल गलत तरीका है बल्कि हमें अपनी तरक्की हासिल करने के वाद और जोशीला हो जाना चाहिए। ध्यान रहे कि किसी कामयावी का नशा कुछ दिन वाद फीका पड़ने लगता है। हर बार इस दुनिया में कुछ नया हो रहा है इसलिए हमें अपने निर्धारित लक्ष्य हासिल करने के बाद फिर अपने अगले लक्ष्य को प्राप्त करने में जुट जाना चाहिए।

यही एक कामयाब इंसान की पहचान है।

कु. गायत्री पुरोहित
बी.एस.सी.II सेम.